RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-12
December-2017
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

कविवर राजेन्द्र मिश्र की रचनाओं में राष्ट्र चेतना

मानस कुमार

शोधार्थी, संस्कृत विभाग, ल0ना0मि0विश्वविद्यालय, दरभंगा–846004(बिहार)

नवगीत में भारतीय स्वरूप की अभिव्यक्ति, जातीय–चेतना व जन–संवेदना के रूप में प्रकट हुई है। वेद में कहा गया है– **'राष्ट्राणि वै विशः'**[1] अर्थात् जनता ही राष्ट्र है। इसलिए राष्ट्रीय जन के आचार–विचार, परम्परा, इतिहास, धर्म, दर्शन और संस्कृति के स्वरूप का बोध, संवर्द्धन और तदनुरूप दिशा–निरूपण ही नवगीत में भारतीयता की अभिव्यक्ति है। आज का कवि देश के भौगोलिक परिवेश का खाका खींचकर उसके बाह्य स्वरूप को फलक पर उतार रहा है दूसरी ओर उसकी आत्मा में अन्तर्भूत उसके प्रति त्याग एवं बलिदान के ओजस्वी तत्त्वों पर भी केन्द्रीभूत हैं।

भवेदिह मर्त्यलोके जन्म मम भूयोऽपि शतवारम्
परं स्याद् भारते।।
विराजन्तामनन्ताः शालयो नतमञ्जरीपुञ्जाः
सुशोभन्तां वनान्ता दुष्प्रवेशलसन्निचुलकुञ्जाः
भवेदिह मृत्तिकायां विलुठनं भूयोऽपि शतवारम्
परं स्याद् भारते।।[2]

वैदिककाल से लेकर वर्तमान काल तक की संस्कृत गीतपरम्परा में कविवर अभिराज राजेन्द्र मिश्र के गीतों का स्थान नवनवस्पन्दनापेक्षी तथा उत्कृष्टतम है। 'वाग्वधूटी, मृद्वीका, श्रुतिम्भरा, मधुपर्णी तथा अभिराजगीता इन अद्यावधि प्रकाशित कविवर मिश्र की संस्कृत नवगीत रचनाओं के गीतों में राष्ट्र–प्रेम, राष्ट्र–भक्ति, भाषा एवं संस्कृति प्रेम, परस्पर समन्वय की भावना आदि की अभिव्यक्ति हुई है। उनका तो स्वप्न भी यही है कि सौ बार भी जन्म मिले तो इसी भारतीय वसुन्धरा पर मिले जिसकी मिट्टी में लोट–पोट होकर जीवन सार्थक हो जाये–

गत्र पुनाति भालं रेवा कटिप्रदेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम्!!
गायन्ति यस्य देवाशुभगीतकानि नित्यम्
सर्वे भवन्तु सुखिनो यस्यतदेव कृत्यम्
अभयप्रदोपदेशाः शमयन्ति पापलेशम्!!
अद्यापि यस्य नीतिर्विस्मापयत्यनल्पम्
उद्घोष्य विश्वशान्तिं भावच मित्रकल्पम्
वन्दे ध्वजं त्रिवर्णं वन्देऽगृहीतकेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम्!![3]

कवि के गीतों में भारत राष्ट्र की बहुरंगी संस्कृति तथा एकता व अखण्डता के प्रति अटूट निष्ठा व्यक्त की गई है तथा हम सबको राष्ट्र के गौरव का बखान करते हुए आत्मगौरव का अभिमान कराया गया है तथा प्रत्येक हृदय में मातृभूमि के प्रति भक्ति भाव एवं समर्पण की भावना का विस्तार किया है।

उच्चतम आदर्शों, सिद्धान्तों तथा जीवन–मूल्यों से परिपूर्ण भारतभूमि की सन्तति को आज जाति–धर्म–पंथ–क्षेत्र आदि के लिए एक–दूसरे से ईर्ष्या–द्वेष एवं आपसी कलह करते हुए देखकर कवि का हृदय विदर्ण हो उठा है। वे कहते हैं कि मुझे आज भारत देश रक्तरंजित सा प्रतीत रहा है–

द्वेषदैन्यधर्षितं शोकतापतर्जितम्
हन्त रक्तरञ्जितं दृश्यतेऽद्य भारतम्!!
जातिपंक्तिभावनां नानको न मन्यते
ग्रन्थसाहिबेऽर्जुनः सर्वसौख्यमश्नुते
सिक्खसम्प्रदायिभिर्मलं न वारितम्!
हन्त रक्तरजितं दृश्यतेऽद्य भारतम्!![4]

कविवर राजेन्द्र मिश्र के काव्य में राष्ट्रवाद अपने विकसित रूप में दिखाई देता है। राष्ट्र की इस दुर्गति को देखकर वे व्याकुल हैं और कहते हैं कि क्या यही स्वतन्त्रता है?

शोकतापजर्जरा द्रोहभारभुग्ना
अद्य दृश्यते न किं भारती वसुन्धरा
दुर्गति हि भारते कीदृशी स्वतन्त्रता?
मामके हि भारते कीदृशी स्वतन्त्रता?

परन्तु एक श्रेष्ठ राष्ट्रभक्त कवि प्रो. मिश्र का यह दृढ़ विश्वास है कि उसका भारत फिर से विश्वगुरु बनेगा। इसीलिए कवि समस्त भारतवासियों को आत्म गौरव का बोध कराते हुए कहते हैं कि भारत के प्राचीन गौरव को स्मरण करो तथा कालचक्र की गति से जो विकृतियाँ भारतीय समाज में आयी हैं, उन्हें उखाड़ फैंको। परस्पर समरसता का वातावरण विकसित करो। क्षेत्र–वर्ग–भाषा–जाति आदि समस्त प्रकार के मतभेदों को दूर करो–

एत सौम्यबान्धवा बन्धुता विधीयताम्
क्षेत्रवर्णभावना सत्वरं निवार्यताम्
प्राजलं पुनर्भवेद् येन भव्यभारतम्!
विश्वपूजितं भवेन्मामकीनभारतम्!![5]

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

आज भारतीय समाज स्वार्थ में अंधा होने के साथ–साथ बहरा भी हो गया है। इसी कारण कवि मिश्र अपनी हताशा व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि मेरे बार–बार चिल्लाने पर भी कोई मेरी बात तक सुनना नहीं चाहता। देश की दीन–हीन दशा के विषय में सोचने के लिए समय नहीं है इस कारण समाज का ढाँचा बिखरता जा रहा है। भारतीय समाज अपने मूल्यों एवं आत्मबोध को विस्मृत करती जा रही है–

ऊर्ध्वबाहुको विरौम्यहं, कोऽपि नो शृणोति वाचिकम्
भाविसाध्वसाद् विरौम्यहं, कोऽपि नो शृणोति वाचिकम्।।
जीर्णकाष्ठभरा तरी नाविकोऽपि मद्यघूर्णितः
वल्गते प्रभञ्जनोऽम्बरे सूचयन्नकाण्डताण्डवम्।।[6]

अतः समय रहते यदि हम नहीं सँभले तो एक दिन भारतदेश स्मृतिशेष रह जायेगा क्योंकि यह राष्ट्र नानाविध मार्गों से अधःपतन की ओर अग्रसर है। हे भारतीय सन्तति! अब भी समय है, अपने–आपको पहचानो। मेरे वचनों को सुनो। तभी एक दिन अपने–आपको अपने **'भारती'** नाम की सार्थकता ढूँढते पाओगे–

राष्ट्रमेतद् विभाजितं प्रसह्य जानपदैः
क्व मार्गयानि विलीनं स्वभारतं बन्धो।।
क्लीबभोग्या यतो हि भारती धरा जाता
ततो हि नित्यविपन्नं स्वभारतं बन्धो!![7]

इस प्रकार कविवर अभिराज राजेन्द्र मिश्र निश्चय ही एक जागरूक, दूरद्रष्टा तथा समाज के कुशल संस्कृत कवि हैं। अपने गीतों में बेबाकीपन के साथ राष्ट्रीय भावना प्रकट की है। आपने भारतदेश की समकालीन समस्याओं से न केवल परिचित करवाया अपितु उनके भारतीय संस्कृतिमूलक समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। आपके लेखन में प्रतिपद नूतनता एवं ताजगी है।

<u>सन्दर्भ सूचीः–</u>

1. ऐतरेय ब्राह्मण–8/26
2. मधुपर्णी, द्वितीयखण्डः गीतयः–'भवेदिह मर्त्यलोके जन्म', पृ–43
3. मधुपर्णी, द्वितीयखण्डः, 'भारतीयोऽहम्',पृ0–45–46
4. वाग्वघूटी, वन्दे सदा स्वदेशम्, पृ0–12
5. श्रुतिम्भरा, राष्ट्रध्वनि–'रक्तरङ्गितं दृश्यतेऽद्य भारतम्', प्र. 58–59 तथा अभिराजगीता, पृ0–90
6. मधुपर्णी, द्वितीयखण्डः, 'सङ्गातं निखिलं पर्याकुलम', पृ0–51–52
7. अभिराजगीता, राष्ट्रप्रशतिगीतम् (विपन्नराष्ट्रम्) यूयं यूयं वयं वयम्, पृ0–96

© RRIJM 2015, All Rights Reserved